[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3485

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत के प्रचार–प्रसार में संचार साधनों की भूमिका

डॉ. नीरज राव
सहा. प्राध्यापक कंठ संगीत
शाासकीय कन्या महाविद्यालय, रतलाम

मनुष्य को आदिकाल से ही संगीत मनोरंजन एवं आमोद–प्रमोद का साधन रहा है। आदिकाल से ही मानव ने अपने मनोरंजन के साधन के लिये विभिन्न प्रकार के प्रयोग किये जैसे–जैसे मानव अपनी सभ्यता का विकास करता गया वैसे–वैसे उसकी समझ और सूझ–बूझ ने नृत्य, गायन और वादन की ओर आकर्षित किया। मानव ने सभ्यता और संस्कृति को समझकर अपने को प्रकृति के साथ तालमेल करते हुए संगीत को सीखा। हमारे पौराणिक ग्रंथों में भी इस बात का उल्लेख है कि माँ पार्वती की गायन मुद्रा को देखकर भगवान शंकर ने क्रमशः पाँच राग हिंडोल, दीपक, श्री, मेघ, कौशिक आदि रागों की रचना की एवं संगीत की उत्पत्ति भगवान शिव के ताण्डव तथा माता पार्वती के लक्ष्य नृत्य से मानी गई। इस प्रकार ताण्डव के ''ता''', और लस्य के ''ल'' इन दो शब्दों से ताल का निर्माण हुआ।

भगवान शिव से संगीत विद्या माता सरस्वती, सरस्वती से नारद, नारद से हनुमान एवं अन्य देवताओं आदि को प्राप्त हुआ। धीरे–धीरे इस कला का प्रचार–प्रसार धरती पर मनुष्य लोक में हुआ। भारत में आजादी से पूर्व संगीत राजाओं, महाराजाओं, नवाबों के यहाँ शाोभायमान था। सम्भ्रान्त समाज में गायन–वादन अथवा नृत्य की कल्पना करना भी संभव नहीं था।

भारत के दो महान संगीत सुधारक एवं प्रचारक स्वर्गीय पंडित विष्णुनारायण भातखण्डे एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने संगीत प्रचार–प्रसार के लिये अथक परिश्रम एवं प्रयास किया तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में संगीत के प्रचार एवं प्रसार में अपना अतुलनीय योगदान दिया। पं. विष्णु नारायण भातखंडे को ही यह श्रेय जाता है कि उन्होंने प्रथम प्रधानमंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू से उच्च शिक्षा जगत में संगीत का शिक्षण कार्य प्रारंभ कराया और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम रूप में सम्मिलित हो सका।

स्व. पंडित विष्णुनारायण भातखंडेजी ने संगीत प्रचार–प्रसार में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया। वर्तमान समय की आवश्यकता है कि हमारी इस सांस्कृतिक एवं वैभव को सहेजने एवं आगे बढ़ाने का उत्तरदायित्व हम सभी का है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया, इंटरनेट आज आधुनिक सभ्यता के इस दौर में हम विश्व के किसी भी हिस्से में संगीत के प्रचार–प्रसार उपरोक्त माध्यमों से कर सकते हैं। कम्प्यूटर एवं इंटरनेट एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्व पटल पर देख सकते हैं।

संदर्भ –

1 *भारतीय संगीत का इतिहास*
2 *निबंध संगीत*
3 *संगीत निबंधमाला*
4 *भारतीय संगीत का इतिहास एवं सौंदर्यशास्त्र*